संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **श्री. बाळासाहेब बिरू कामाण्णा** का **" ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अनुशीलन "** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(डॉ. पी. एस. पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 25 MAR 2004

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

प्र मा ण प त्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. बाळासाहेब बिरू कामाण्णा** ने **शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,** की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए **"ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अनुशीलन"** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस शोध-कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट होकर ही मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ ।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 24 MAR 2004

शोध -निर्देशक

24.03.04

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

प्र ख्या प न

" ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अनुशीलन " लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 24 MAR 2004

शोध-छात्र

(श्री. बाळासाहेब बिरू कामाण्णा)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

जीवन में एक बात निश्चित है कि यहाँ सबकुछ अनिश्चित है। इस अनिश्चतता से ही आदमी को निश्चित मार्ग पर आगे बढ़ना पड़ता है। मैं हिंदी विषय लेकर एम्. फिल. उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करूँगा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था । सन् 1997 की बात है, मैं स्वामी विवेकानंद कॉलेज में बी.ए. एक में पढ़ता था। तब 'हिंदी दिवस' के अवसर पर शिवाजी विश्वविद्यालय के डॉ. अर्जुन चव्हाण जी व्याख्यान देने आए थे। उनके व्याख्यान से तथा हिंदी ज्ञान-विस्तार से मैं काफी प्रभावित हो गया और मैंने निश्चय किया की भविष्य में हिंदी विषय का ही चयन करूँगा। उसी दृष्टि से मेरे कदम आगे बढ़ते गए। एम्.ए. के उपरांत 'एम्.फिल.' उपाधि के लिए शोध-प्रबंध प्रस्तुत करूँ यह विचार मुझे सताने लगा। इससे पहले मुझे चिंता थी शोध-निर्देशक के उपलब्ध होने की । लेकिन उस समय हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी मुझे निर्देशन करनेवाले हैं यह जान कर मैं बहुत खुश हुआ। छह साल पूर्व जिनके व्याख्यान से मैं प्रभावित हुआ था, वही प्रभावी पुरूष मेरे शोध-निर्देशक हैं, इससे बड़ी जीवन को सार्थक तथा निश्चित दिशा देनेवाली बात और कौनसी हो सकती है ?

बी.ए. तथा एम्.ए. के अध्ययन काल में मैंने बहुत सारी कहानियाँ तथा उपन्यास पढ़े थे। लेकिन मेरी रूचि किसी एक विधा के प्रति जागृत नही हो सकी थी। एम्.फिल्. उपाधि के लिए विषय-चयन की दृष्टि से मैं बेचैन रहने लगा । अनेक प्रश्न मेरे सम्मुख उपस्थित हो गए थे। इस सिलसिले में मेरे पूजनीय, गुरूवर्य विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से मिला। तब आपकी हाल ही में राजेंद्र यादव जी से ओमप्रकाश वाल्मीकि की बहुचर्चित आत्मकथा 'जूठन' संबंधी चर्चा हुई थी तथा उनका 'सलाम' कहानी संग्रह भी चर्चित था। शायद मेरे गुरूवर्य ने मेरी रूचि को ताड़ लिया हो और मुझे ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ पढ़ने का सुझाव दिया । उस दौरान मैंने वाल्मीकि जी की 'हंस' में

प्रकाशित 'घुसपैठिये', 'प्रमोशन' और 'कुड़ाघर' आदि कहानियाँ पढ़ी और उनकी कहानियाँ मुझे काफी अच्छी और वास्तविक लगी। फिर गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के सुझाओं को अंतिम रूप देने हेतु उनसे विचार विमर्श करके ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों पर ' एम्.फिल.' उपाधि के लिए काम करने का निश्चय किया ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी साहित्य पर काम करते वक्त प्रारंभ में मेरे सम्मुख निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे -

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा है ?

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि प्राय: दलितों को ही अपनी कहानियों का विषय क्यों बनाते हैं ?

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि की दलित कहानियों के पीछे क्या मानसिकता हो सकती है ?

4 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का स्वरूप तथा दलित समस्याओं का रूप किस प्रकार का है ?

5 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलितों की स्थिति कैसी है ?

6 दलितों की प्रात:निधिक रूप से कहानियाँ लिखकर ओमप्रकाश वाल्मीकि समाज से क्या अपेक्षा रखते हैं ?

7 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ क्या समाज परिवर्तन की मांग करती हैं ?

8 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में कौनसी दलित समस्याएँ चित्रित हुई मिलती हैं ?

9 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ क्या कहानी कला की दृष्टि से सफल बन गयी हैं ?

विवेच्य कहानियों के अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें आधार मानकर निकाले गए निष्कर्ष उपसंहार में दिए हैं। लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति को ध्यान में रखकर सुविधा हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके शोध विषय का विवेचन विश्लेषण किया है -

प्रथम अध्याय ''ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' इस अध्याय में ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को तलाशने का प्रयास किया है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संक्षिप्त परिचय में उनकी जन्मतिथि तथा जन्मस्थान, परिवार, कुल-परंपरा, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, नौकरी, रहन स्हन, खानपान, विवाह तथा संतान आदि बातों का विवेचन स्पष्ट किया है। साथ ही साथ उनके बहु आयामी व्यक्तित्व के पहलुओं का परिचय तथा संक्षिप्त विश्लेषण दिया है। उनके कृतित्व में उनकी साहित्यिक रचनाओं जैसे कहानी संग्रह, कविता संग्रह, नाटक तथा उनकी आलोचनात्मक किताबें आदि की सूची दी है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है ''ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ: स्वरूप विवेचन'' इस अध्याय में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का स्वरूप विवेचन करके संक्षेप में वर्गीकरण के साथ परिचय दिया है। जैसे भावप्रवण कथाएँ, संघर्षयुक्त कथाएँ, दमन करनेवाली कथाएँ, यौन संबंध में जाति न माननेवाली कथा, जातिभय उत्पन्न करनेवाली कथाएँ, दलितों का इस्तेमाल करनेवाली कथाएँ तथा शोषण करनेवाली कथाएँ आदि इन विभिन्न स्वरूपों में कहानियाँ विभाजित करके कहानियों का गहराई से अध्ययन किया हैं तथा प्राप्त तथ्यों के आधार पर समन्वित निष्कर्ष अंत में प्रस्तुत किए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ''ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन'' प्रस्तुत अध्याय में चरित्र-चित्रण और कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्व के साथ-साथ चरित्रों की दशा से लेकर उनकी मानसिकता का

अध्ययन किया है। पात्रों की स्थिति के अनुसार दबे हुए चरित्र, आदर्श चरित्र, खल-चरित्र, विद्रोही-चरित्र, असहाय चरित्र, तनावग्रस्त चरित्र तथा कुछ महत्त्वपूर्ण चरित्रों को प्रस्तुत किया है। विवेच्य अध्याय में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में विविध चरित्रगत पहलुओं को प्रस्तुत किया हैं। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित जीवन की समस्याएँ'' इस अध्याय के अंतर्गत दलित जीवन के विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इसमें जातिवाद की समस्या, निर्दोश को सजा दिए जाने की समस्या, परंपरागत व्यवसाय स्वीकारने की विवशता की समस्या, परंपरा के निर्वाह की समस्या, बलिप्रथा की समस्या, जाति की हीनता से दबे रहने की समस्या, अनपढ़ लोगों की समस्या, नौकरी में प्रमोशन की समस्या, मजदूरों को जातिवादी मानसिकता की समस्या, निवास की समस्या, मेडिकल कॉलेज में दलितों की समस्या तथा दलितों में भी उच्च-नीच की समस्या आदि विविध समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। विवेच्य अध्याय में दलितों की विवशता ही वाल्मीकि जी की समस्याओं में विशेष रूप से दृष्टिगोचर हुई है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - ''कहानी का कला की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का मूल्यांकन'' इस अध्याय में कहानी के प्रधान तत्व अर्थात शीर्षक, कथानक, कहानी में चरित्र चित्रण, कथोपकथन (संवाद), देशकाल वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य आदि का विस्तार से विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं। अंत में ' **उपसंहार** ' दिया है जिसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पदधृति से निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए हैं। तद्उपरान्त परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी-साहित्य में दलित जन-जीवन को अध्ययन का केंद्रबिंदु मानकर इस लघु-शोध प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।

2 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित दलित जीवन के विविध पहलुओं को जानने की कोशिश की है, तथा उनकी मानसिकता एवं दयनीयता का चित्रण किया है।

4 आजादी के इतने साल बाद भी दलितों के प्रति सवर्ण-दृष्टिकोण प्रतिकूल ही है, इसका सूक्ष्मता एवं गहराई से अनुशीलन करते हुए दलितों की स्थिति और दशा को बारी की से व्याख्यायित किया है।

ऋणनिर्देश -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति जिन ज्ञात, अज्ञात, देवि और सज्जनों की प्रेरणा तथा सहायता से हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

सबसे पहले प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध, शोध विषय की मौलिकता के हिमायती, सदा उत्साही, प्रेरणादायी, छात्र प्रिय एवं मेरे आदर्श गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, प्रपाठक, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, के विशिष्ट, प्रेरक एवं कुशल निर्देशन का फल है। आपने विभिन्न व्यस्तताओं में अपनी बीमारी का खयाल भी न करते हुए समय-समय पर मेरे आशंकित प्रश्नों का समाधान अत्यंत आत्मीयता से किया है मेरे उत्साह से ज्यादा आपका कुशल मार्गदर्शन ही महत्त्वपूर्ण है, जिसका फल यह लघु शोध-प्रबंध है।

आपने केवल शोध-निर्देशक ही नहीं बल्कि एक अच्छे मित्र से लेकर एक आदर्श पिता तक के सारे गुणों की बौछार मुझपर की है, जिसमें से एक बूँद शोध-निर्देशक

के रूप में अपनी व्यापकता स्पष्ट कर रही है। आपका हर एक शब्द नये विचारों की मांग करता है। आपकी जीवन-कृति एवं जीवन-दृष्टि ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। मुझ जैसे गरीब छात्र को आपने निर्देशन योग्य समझा यह आपका बड़प्पन है, अन्यथा आपका विश्वास भाजन बनना मेरे लिए अग्नि परीक्षा देने जैसा ही था। मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति शब्दों में ऋण प्रकट करने की अपेक्षा आजीवन आपकी छत्रछाया में रहना पसंद करूँगा । आपके अविराम सहयोग स्नेह और प्रेम के प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना संभव नहीं है। आपका प्रेम ऋण व्यक्त करने से कम नहीं होगा इसी आशावाद से मैं प्रेरित हूँ और सदा रहूँगा ।

मैंने जिस विषय पर अनुसंधान कार्य किया है, वह रचनाकार, श्रदधेय ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के सहयोग के बिना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति न होती। आपने व्यस्तताओं में भी मुझे यथायोग्य सहयोग देते रहे फिर चाहे पत्राचार हो या दूरभाष । आपके सहयोग के साथ-साथ आपकी मेरे प्रति शुभकामनाएँ भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। अत: मैं आपके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

आर्थिक विपन्नता के कारण अधूरी पढ़ाई छोड़नेवाले तथा अपनी अधूरी पढ़ाई अपने बेटे के माध्यम से पूर्ण करनेवाले मेरे पिताजी (आण्णा) और माँसाहेब जी का अपार कष्ट, मेरे प्रति स्नेह, विश्वास और मुझे हमेशा चेतना और उत्साह प्रदान करनेवाले आदर्श संस्कार मुझे इस उपाधि की देहलिज तक ले आये हैं। उनके कष्ट एवं यातनाओं को ईश्वर पूर्ण विराम दे और मुझे आगे बढ़ने की शक्ति दे यही प्रार्थना मैं ईश्वर से करता हूँ । आदरणीय माता-पिता के साथ-साथ मेरा छोटा भाई विठ्ठल कामाण्णा जो मुझसे छोटा होकर भी खुद काम करके परिवार के साथ मेरी शिक्षा की जिम्मेदारी निभाता रहा मैं उसका आजन्म ऋणी रहूँगा तथा उसके कष्ट को नहीं भूल सकूँगा।

मुझे मानसिक आधार देनेवाले मराठी के प्रसिदध् फिल्म कवि जगदीश खेबूडकर, उनकी बेटी कविता खेबूडकर (पत्रकार) तथा मोहन हावलदार (पत्रकार), साथ ही सुरेश जाधव (दाजी), आप्पासो कुरणे (दाजी), मंगा पुजारी, चंद्रकांत पुजारी, अमर

देवळे, महेश भाणसे, रामचंद्र लाटे, धनंजय सोनवणे, आप्पासो पाटील (साहेब), सोमनाथ चौधरी (राजस्थान), पोपट पिराई एवं मेरे चाचा जी रामा कामाण्णा, दत्ता भाणसे, सुरेश कामाण्णा आदि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ । तथा गजानन नाझरे, कृष्णात मोटे, बाळू बचाई, धोंडिबा डबके, रावसाहेब ओमा एवं विठ्ठल बिरदेव गडरी नृत्य संघठन और लोग रंजन कला मंच प.कोडोली के सभी कार्यकर्ताओं के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।

अब तक शिक्षा-जीवन में मुझे गुरूजनों का बड़ा प्यार तथा प्रेरणा मिली है। इनमें प्रमुख प्राचार्य डी. ए. पाटील, प्रा. नानासाहेब साळुखे, प्रा. हिरेमठ, डॉ. आशा मणियार, प्रा. एस. एस. पाटील, डॉ. के. पी. शहा, डॉ. बी. एल. पवार, सौ. निंबाळकर तथा मुझे भाइयों जैसे प्रेम देनेवाले मेरे वरिष्ठ सहयोगी डॉ. साताप्पा चव्हाण, भाऊसाहेब नवले, डॉ. हनुमंत शेवाळे, पंडित बन्ने, जितेंद्र कोल्हे, दयानंद रांजने, अमर जाधव, रवि पाटील आदि के प्रति भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ । मेरे एम्.फिल. के सहपाठी अशोक मरळे, दयानंद पाटील, कु. स्नेहल गर्जे-पाटील, सुनिता जाधव, के. रजुल्ला (केरल), महादेवी श्रृंगारे, बेबी खिलारे आदि के प्रति भी मैं धन्यवाद प्रकट करता हूँ । विभाग के क्लर्क अनिल साळुंखे तथा कृष्णात पोवार का भी मैं दिल से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर एवं जयकर ग्रंथालय, पुणे से हुई । अत: इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा अन्य सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले श्री बी. आर. सावंत तथा उनके बेटे चंद्रमोहन सावंत, कोल्हापुर का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

श्री. बाळासाहेब बिरू कामाण्णा